ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 15 अंक 16 कुल पृष्ठ-8 12 से 18 नवम्बर, 2020 दयानन्दाब्द 197 सृष्टि सम्वत् 1960853121 सम्वत् 2077 का. कृ.-14

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के बलिदान दिवस के अवसर पर

महर्षि के विचारों एवं सिद्धान्तों को जन–जन तक पहुँचाने का लें संकल्प

आधुनिक (इलेक्ट्रानिक मीडिया) प्रचार माध्यमों के द्वारा युवाओं को वैदिक विचारधारा से जोड़ने का करें प्रयास

– स्वामी आर्यवेश

19वीं शताब्दी के आग्नेय पुरुष, वेदोद्धारक, प्रातः स्मरणीय महर्षि दयानन्द सरस्वती जी जब कार्यक्षेत्र में अवतरित हुए उस समय चारों तरफ हताशा, अन्धकार, स्वाभिमान का अभाव, धर्म के नाम पर पाखण्ड, सत्य के नाम पर असत्य, ज्ञान के नाम पर अज्ञान का साम्राज्य व्याप्त था। ऐसे समय में महर्षि ने जन–मानस को नई शक्ति, प्रेरणा तथा दिशा दी। भारत के कण–कण में स्फूर्ति का संचार किया। पाखण्डों का खण्डन किया तथा राम, कृष्ण और ऋषि–मुनियों की पावन परम्परा को पुनः प्रवाहित किया। वेद ज्ञान की ज्योतिर्मय पताका फहराने के लिए जन–जन में वेद ज्ञान के प्रति आस्था जगाई। वर्तमान युग में यह बात किसी से छुपी नहीं है कि महर्षि दयानन्द जी जहाँ एक ओर प्राचीनता के पक्षधर और वेदोद्धारक थे वहीं वे दूसरी ओर नवयुग के नेता, वर्तमान के विधाता और भविष्य के पथ–प्रदर्शक भी थे।

महर्षि दयानन्द जी द्वारा स्थापित आर्य समाज अपनी स्थापना के बाद 150 वर्ष तक कुरीतियों, पाखण्डों, अज्ञान व अन्धविश्वास को मिटाता हुआ विजय प्राप्त करता रहा है। विभिन्न बड़े–बड़े आन्दोलन करके देश को जगाने का कार्य आर्य समाज ने किया है। देशभक्ति, धर्मभक्ति, उच्च चरित्र, कथनी और करनी में एकरूपता आर्य समाज तथा आर्य समाजियों की विशेषता रही है और इन्हीं विशेषताओं के कारण आर्य समाज ने विश्व की विचारधारा को अत्यन्त प्रभावित किया। यह सब इसलिए हो पाया कि उस समय के आर्यों में अपूर्व नैतिकता, वेदों तथा आर्ष ग्रन्थों का ज्ञान, महर्षि के प्रति असीम निष्ठा, त्याग और लगन थी।

वर्तमान समय में आर्य समाज को एकबार नये सिरे से कमर कसकर महर्षि के मिशन के लिए कृत–संकल्प होने की आवश्यकता है, क्योंकि विभिन्न क्षेत्रों में पनप रहे अज्ञान, अन्याय एवं अनैतिकता आदि के कारण आम आदमी निरन्तर पतन की ओर जा रहा है। यद्यपि आर्य समाज अपने स्तर पर प्रयास कर रहा है किन्तु परिणाम आशा जनक नहीं निकल रहे हैं। अतः आर्य समाज को अपनी कार्य एवं प्रचारशैली की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में समीक्षा करके आधुनिक प्रचार माध्यमों एवं योजनाओं के माध्यम से युद्ध स्तर पर प्रचार करने की आवश्यकता है। यदि महर्षि दयानन्द जी के आदर्श और उनके वेदोक्त मन्तव्यों को अपने सम्मुख रखते हुए कर्मक्षेत्र में उतरें तथा अपने जीवन को सच्चा आर्य जीवन बनाने का प्रयत्न करें तो इसमें कोई शक नहीं है कि आर्य समाज पुनः अपने प्राचीन गौरव को प्राप्त करने में सक्षम हो सकता है। वर्तमान परिस्थितियों में पूरे विश्व को नई दिशा देने का दायित्व आर्य समाज पर आ गया है। क्योंकि समाज में व्याप्त नशाखोरी, कन्या भ्रूण हत्या, गोहत्या, भ्रष्टाचार, नारी उत्पीड़न, पाखण्ड, शोषण, शिक्षा प्रणाली में पनम रहे दोष, चारित्रिक पतन, वैमनस्य, जलवायु परिवर्तन एवं विभिन्न प्रकार के प्रदूषण, विकास के आधुनिक विनाशकारी तरीके ऐसे ज्वलन्त प्रश्न हैं जिनके सम्बन्ध में आर्य समाज ही पूरी मानवता को दिशा दे सकता है। आर्य समाज के विद्वानों, मनीषियों एवं अधिकारियों को इस दिशा में गम्भीर चिन्तन करके एक रचनात्मक एवं ठोस कार्यक्रम पूरे विश्व के समक्ष प्रस्तुत करना चाहिए। क्योंकि आर्य समाज केवल आर्य समाजियों के लिए ही नहीं बनाया गया है बल्कि पूरे संसार का उपकार करने का दायित्व महर्षि दयानन्द जी ने आर्य समाज को सौंपा हुआ है। आम व्यक्तियों की निगाहें आर्य समाज के ऊपर लगी हैं। आज आवश्यकता क्रांतिकारी चरित्र, तेजस्वी स्वरूप और प्रभावशाली ढंग से एकजुट होकर कार्य करने की तथा लोक कल्याणकारी योजनाओं के माध्यम से ज्ञान सम्मत, तर्कपूर्ण, वैदिक सिद्धान्तों को जन–जन तक पहुँचाने की है तथा पूरे विश्व के आर्यों को तथा समाज के त्रस्त लोगों को साथ लेकर आर्य समाज के संगठन को व्यापक स्तर पर खड़ा करने की है।

महर्षि का बलिदान दिवस हम 14 नवम्बर, 2020 को मनाने जा रहे हैं। महर्षि का यह बलिदान हमें जगाने, श्रेष्ठ व्रतों, संकल्पों को दोहराने की प्रेरणा देता है। अतः आर्यों उठो, जागो और अपने कर्त्तव्यों को पूर्ण करते हुए ऋषि ऋण से उऋण होने का प्रयास करो। इस कोरोनाकाल में आधुनिक प्रचार माध्यमों (इलेक्ट्रानिक मीडिया) से महर्षि के सिद्धान्तों और मन्तव्यों को जन–जन तक पहुँचाने का संकल्प हम सबको लेना चाहिए। आर्य समाज के समस्त पदाधिकारियों, नेताओं और कार्यकर्ताओं को मिलकर गम्भीरतापूर्वक विचार करना चाहिए कि महर्षि के स्वप्न को पूर्ण करने के लिए हम सब क्या कर रहे हैं और हमें क्या करना है।

– प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

आर्यों! याद करो ऋषि की कुर्बानी

– डॉ. महेश विद्यालंकार

आर्यों! सोचो? यदि ऐसे दैवीय गुणों वाला महापुरुष दुनिया की किसी अन्य धरती पर पैदा हुआ होता तो लोग उनकी देवदूत पैगम्बर तथा मसीहा की तरह पूजा करते। उनके प्रेरक सन्देश एवं उपदेशों को शिलालेखों व इतिहास में अमर बना देते। उनके चित्रों को देवताओं की तरह पूजते। उनके चरण रज को पाकर सौभाग्य मनाते। उनके नाम की माला पहनते। हम भारतीयों ने ऋषि के उपकारों व बलिदान के बदले में दिया ही क्या है? अनेक बाहर जहर देकर मारने की कोशिश की, अन्ततः उन्हें हलाहल पिलाकर ही हमें चैन आया?

खंजर भी चलाये, जहर भी पिलाये अपनो ने।

अपनों के अहसां क्या कम हैं, गैरों की शिकायत क्या होगी?

दीपावली अन्धकार पर प्रकाश की विजय का पर्व है। अज्ञान, अन्धविश्वास असत्य, अधर्म, पाखण्ड आदि के विरोधी महामानव एवं युग पुरुष महर्षि दयानन्द के निर्वाणोत्सव की अमर बेला का नाम दीवाली है। आजीवन विषपायी ऋषि के तप, त्याग, बलिदान, उपकारों के प्रति आभार एवं कृतज्ञता प्रकट करने की पुण्य तिथि है। सजल नेत्रों से देवात्मा को नम्र श्रद्धांजलि देने का यह स्मृति पर्व है। एक ओर दीपावली की प्रसन्नता एवं उल्लास है। दूसरी ओर युगों के बाद वरदान रूप में प्राप्त ऋषिवर के नश्वर शरीर छोड़ने की विदा बेला है। ऋषि संसार को सत्यज्ञान, सत्यधर्म एवं सत्य परमेश्वर का मार्ग दिखाने आये थे। दीपावली के दिन असंख्य दीप जलाकर चले गये। उसी महाबलिदान की अमर कहानी दीवाली हर साल दुहराती है। इसी दिन उस पुण्यात्मा ने संसार से महायात्रा की थी। इसलिए दीपावली आर्य समाज के इतिहास में विशेष महत्त्व रखती है।

सूर्य अस्ताचल को बढ़ रहा था। अजमेर के भिनाई भवन में ऋषिवर शान्त भाव से लेटे थे। वह महायोगी अनुभव कर रहा था। आज कौन सा मास, पक्ष व दिन है। किसी भक्त ने कहा – आज कार्तिक मास की अमावस्या और दीपावली का पर्व है। उनका मुखमण्डल प्रसन्न एवं शान्त था। थोड़ी देर बाद बोले सभी दरवाजे और खिड़कियाँ खोल दो। मुक्तात्मा ने ऊपर की ओर दृष्टि करके चारों ओर अलौकिक और चमत्कारी भाव देखा। प्रार्थना की, गायत्री मन्त्र का पाठ किया। तीव्र स्वर से ओ३म् का उच्चारण करने लगे। चेहरे पर अपार शान्ति सन्तोष व प्रसन्नता थी। शान्तभाव से मुख से उच्चारित होने लगा – हे दयामय सर्व शक्तिमान ईश्वर! तेरी यही इच्छा है तेरी इच्छा पूर्ण हो। यह बोलकर लम्बी सांस खींची और बाहर निकाल दी। प्रभु का प्यारा प्रभु की शरण में चला गया। भक्त जन असहाय बनकर देखते रहे। यह निराले योगी की, निराली अन्तिम यात्रा थी। यह दुनियां के इतिहास में निराली ही घटना है। जो कोई होश में, तिथि, दिन पूछकर मुस्कराता तथा प्रभु को स्मरण करता हुआ गया हो। ऋषि प्रभु की इच्छा से संसार में आये थे। प्रभु की इच्छा को पूर्ण करके चले गए। जाते जाते भी नास्तिक गुरुदत्त को आस्तिक बना गए। विष देने वाले को भी जीवनदान दे गए। सम्पूर्ण जीवन वैदिक धर्म के पुनरुद्धार, वेद प्रचार और मानवता के कल्याण एवं उत्थान में लगा गए। ऋषि का पूरा जीवन प्रेरक था और मृत्यु भी प्रेरक बनी।

ऐसा अद्वितीय इतिहास पुरुष युगों के बाद देश को मिला थ। दुर्भाग्य है कि उस महापुरुष का अपनों और परायों किसी ने उचित मूल्यांकन नहीं किया। सच्चाई है कि संसार आज तक उनके विचारों, आदर्शों एवं जीवन सन्देशों को समझ नहीं सका। वे सत्य के पुजारी, सत्यवक्ता, सत्य के प्रचारक और सत्य पर ही शहीद हो गए। ऋषि का समग्र जीवन, कठिनाईयों विरोधों और संघर्ष में गुजारा। उन्होंने कभी अपने लिए न चाहा, न माँगा और न संग्रह किया। कोई मठ, मंदिर आश्रम आदि नहीं बनाया। वे देश की दीन हीन दुर्दशा को देखकर बेचैन होते थे। जो देश कभी आध्यात्म सम्पदा और सत्यज्ञान के कारण जगत्गुरु था। जो देश धन-धान्य वैभव के कारण सोने की चिड़िया कहलाता था। ऋषि देश में फैले अज्ञान, अविद्या, अन्धविश्वास, पाखण्ड, गुरुडम, आलस्य, आपसी फूट आदि के लिए घण्टों करुणक्रन्दन किया करते थे – किसी कवि ने उनकी पीड़ा को इन शब्दों रखा है –

एक हूक सी दिल में उठती है, एक दर्द जिगर में होता है। हम रात को उठकर रोते हैं, जब सारा आलम सोता है।।

वह महामानव अपने दुःख दर्द व अभाव के लिए कभी नहीं रोया। वे जीवन भर कभी चैन से नहीं सोये। वे जहर पीते रहे, पत्थर खाते रहे, अपमान सहते गए, गालियाँ सुनते रहे। फिर भी वह दया का भण्डार रो रोकर आर्य जाति को जगाता रहा। यदि समय के सभी महापुरुषों को तराजू के एक पलड़े में रखा जाये और दूसरे पलड़े में ऋषि को तो ऋषि अपने कृतित्व, व्यक्तित्व योगदान, तप त्याग बलिदान आदि की दृष्टि से भारी होंगे। उन्होंने संसार के बड़े से बड़े प्रलोभन, पद, धन, महत्त्व नाम, आदि

को ठुकरा दिया। जीवन में कहीं दाग नहीं लगने दिया। वे तो जगत में उनसठ साल के डेपुटेशन पर आये थे। संसार को प्रत्येक क्षेत्र में सत्यज्ञान व आदर्श देकर चले गए।

आर्यों! सोचो? यदि ऐसे दैवीय गुणों वाला महापुरुष दुनिया की किसी अन्य धरती पर पैदा हुआ होता तो लोग उनकी देवदूत पैगम्बर तथा मसीहा की तरह पूजा करते। उनके प्रेरक सन्देश एवं उपदेशों को शिलालेखों व इतिहास में अमर बना देते। उनके चित्रों को देवताओं की तरह पूजते। उनके चरण रज को पाकर सौभाग्य मनाते। उनके नाम की माला पहनते। हम भारतीयों ने ऋषि के उपकारों व बलिदान के बदले में दिया ही क्या है? अनेक बाहर जहर देकर मारने की कोशिश की, अन्ततः उन्हें हलाहल पिलाकर ही हमें चैन आया?

खंजर भी चलाये, जहर भी पिलाये अपनो ने।

अपनों के अहसां क्या कम हैं, गैरों की शिकायत क्या होगी?

ऋषि का सम्पूर्ण जीवन प्रेरणाओं, आदर्शों और उपकारों से भरा हुआ है। जिसने उन्हें, देखा, सुना, पढ़ा, समझा और सम्पर्क में आया। उसकी जीवन धारा बदल गई। कायाकल्प हो गया। न जाने कितने, गुरुदत्त, श्रद्धानन्द, हंसराज, लेखराम, अमीचन्द आदि के जीवन सन्त और परोपकारी बन गए। इतनी चुम्बकीय व जादुई शक्ति और आकर्षण और किसी महापुरुष में नजर नहीं आता है। लोग तलवार लेकर आये और शिष्य बनकर गए। जिधर से निकले, उधर से ही ढोंग, पाखण्ड, अज्ञान, पोपलीला आदि मिटाते गए। सन्मार्ग एवं सत्धर्म का प्रकाश फैलाते गए। रोती हुई भारत माता के आंसू किसी ने पोंछे हैं – वह केवल ऋषि दयानन्द थे। ऋषि हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए किले की दीवार बनकर खड़े हुए। देश, धर्म, जाति और मानवता का दर्द उन्हें बेचैन करता था। इन्हीं के निर्माण व उद्धार के लिए उन्होंने अपना सारा जीवन लगाया तथा बलिदान कर दिया। ऋषि ने असत्य, अधर्म और गलत बातों से कभी समझौता नहीं किया। यदि उन्होंने समझौता तथा दूसरों को राजी करने वाली बातें की होती तो वे अपने युग के सबसे बड़े भगवान होते। ऋषि ने अपने जीवन में कभी चमत्कारी और दैवीय रूप नहीं आने दिया। आज उन्हीं के अनुयायी समझौतावादी, सुविधावादी तथा अवसरवादी बनकर, सिद्धान्तों, आदर्शों एवं विचारधारा का हनन कर रहे हैं। यह गंभीर चिन्ता का विषय है। आज आवश्यकता है – आर्य समाज सभा संस्था, संगठन और ऋषि के नाम पर चलने वाले स्कूल कॉलेज, आश्रम संस्थान आदि को ऋषि के अस्तित्व, स्वरूप, सिद्धान्त, परम्परा एवं आदर्शों की कठोरता से रक्षा करें। जो उस पुण्यात्मा ने ज्ञान व विचारों का दीप जलाया था। उसे वर्तमान में तेजी में फैलते ढोंग, पाखण्ड, गुरुडम, अज्ञान, मूर्तिपूजा, अवतार, गुरु महन्त आदि बुझा रहे हैं। स्वामी दयानन्द का नाम आर्य समाज के अलावा कोई नहीं लेता है? यदि हमीं ऋषि को जीवन, व्यवहार, सभा संगठन, संस्थाओं आदि से निकाल देंगे उनके आदर्शों व विचारों को भुला देंगे तो कौन उन्हें जीवित रखेगा? महापुरुष जीवित और अमर अपने सिद्धान्तों, अनुयायियों, विचारों तथा आदर्शों से रहते हैं।

परम्परागत प्रतिवर्ष दीपावली आती है। हम आर्यजन भी श्रद्धांजलि के रूप में निर्वाणोत्सव मनाते हैं। लोग मिलते हैं। मेला लगता है। नेतागण आते हैं। जोर शोर से भाषण होते हैं। कुछ देर बाद भीड़ बिखर जाती है। बस हमारा कर्त्तव्य पूरा हो गया। क्या थी निर्वाणोत्सव की मूल, चेतना, भावना और सन्देश? क्या यही उस महामानव के सम्पूर्ण कृतित्व एवं व्यक्तित्व का मूल्यांकन है? क्या यही आजीवन विषपायी के तप, त्याग एवं बलिदान का प्रतिदान है? केवल जलसा, जलूस, लंगर, फोटो व माला तब तक ही हमारे भावी कार्यक्रम होते हैं? क्या इसीलिए उस देवात्मा ने मुक्ति के आनन्द को ठुकराकर आर्य समाज बनाया था?

ये पर्व, स्मृतिदिवस, जयन्तिया, सम्मेलन आदि हमें जगाने आते हैं? क्या खोया, क्या पाया? कहाँ के लिए चले थे कहाँ जा रहे हैं? सोचो! ठहरो! देखो! मूल में भूल कहाँ है? ऋषि निर्वाण दिवस हमें सन्देश देता है – जिस उद्देश्य, आदर्श, सिद्धान्त तथा कार्यों के लिए आर्य समाज बनाया था। उसके लिए हम क्या कर रहे हैं? ऋषि का महान बलिदान हमें पुकार रहा है। यदि सच्चे अर्थ में ऋषि को स्मरण और श्रद्धांजलि देनी है तो उनके बताए मार्ग पर चलो। उनकी कुर्बानी को स्मरण करो। यही निर्वाणोत्सव का सन्देश और प्रेरणा है।

–बी.जे.-29, पूर्वी शालीमार बाग, दिल्ली-52

ज्योति पर्व दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएँ

सार्वदेशिक सभा परिवार समस्त आर्यजनों को दीपावली के पुनीत पर्व पर सुख, समृद्धि, स्वास्थ्य और शांति की कामना से परिपूर्ण बधाई देता है।

दीपावली के दिन ही महर्षि दयानन्द सरस्वती का निर्वाण, समस्त आर्यों के लिए ईश्वर भक्ति के मार्ग पर चलने तथा संगठित होने की सर्वोच्च प्रेरणा बनें, ऐसी परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है।

स्वामी आर्यवेश सभा प्रधान

प्रो. विट्ठलराव आर्य सभा मंत्री

पं. माया प्रकाश त्यागी कोषाध्यक्ष

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

''दयानन्द भवन'' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-110002

महर्षि निर्वाण दिवस पर विशेष

कहने को तो वो दीवाली थी सचमुच में वो दिवाला था

– अशोक आर्य

प्रतिवर्ष जब भी दीपावली का आगमन होता है तो लाखों दीयों की जगमग रोशनी के बीच उत्साह और उमंग का संचरण होता है। अन्धकार से प्रकाश की ओर जाने का भाव समाज में सम्प्रेषित होता है पर साथ ही कहीं एक टीस का अनुभव भी होता है। कारण कि वो दीपावली का दिन ही था जब उस महान् सन्त ने इस संसार को अलविदा कहा था, जिसने इस देश को ही नहीं सम्पूर्ण विश्व मानवता को 'अपने लिए जीने' एवं 'औरों के लिए जीने' का अन्तर समझाते हुए एक प्रशस्त जीवन दिशा प्रदान की थी जिस पर चलकर मनुष्य मात्र अपना कल्याण कर सकता था, अपने अभीष्ट को प्राप्त कर सकता था। यूँ तो संसार में कितने ही महापुरुष हुए हैं और सभी ने अपने–अपने चिन्तन के अनुसार समाज में व्याप्त बुराईयों को दूर करने का प्रयास किया, परन्तु जैसा समग्र चिन्तन और समग्र प्रयास महर्षि देव दयानन्द सरस्वती ने किया वैसा देखने को नहीं मिलता। ऋषि दयानन्द का अवतरण जब इस देश में हुआ तब हम राजनीतिक रूप से गुलामी की जंजीरों में जकड़े हुए थे ही परन्तु स्वयं के द्वारा ओढ़ी हुई मानसिक परतंत्रता के कारण अपने और समाज के लिए पतन के गर्त में ले जाने वाली दिशा की ओर धीरे–धीरे अग्रसर हो रहे थे। समाज के लगभग 85 प्रतिशत तबके को शिक्षा जैसे अमूल्य रत्न से वंचित कर दिया गया था और जब विद्या का स्थान अविद्या का तिमिराच्छन्न परिवेश ले ले तो परिणाम क्या होगा यह आसानी से समझा जा सकता है और वह हुआ भी। स्वार्थ, लालच, ऐषणाओं ने हमारे जीवन पर अधिकार जमा लिया था। नतीजतन वैयक्तिक, पारिवारिक, सामाजिक और राष्ट्रीय स्तर पर अनेकानेक समस्याएँ सुरसा जैसा मुँह खोलकर खड़ी हो गईं थीं। आवश्यकता थी समग्रतापूर्ण निदान की और यह निदान ऋषि दयानन्द ने दिया। इस निदान के क्रम में स्वामी दयानन्द ने लीक से हटकर कई अभिनव प्रयोग किए जो अन्य मनीषियों के जीवन में देखने में नजर नहीं आते। उपयोगिता के दृष्टिकोण से ऋषि दयानन्द ने अनेक परम्पराओं को भी छोड़ दिया। क्योंकि वे परम्पराओं के गुलाम नहीं थे। स्वामी जी संस्कृत भाषा के प्रकाण्ड पंडित थे। धारा प्रवाह संस्कृत में प्रवचन देते थे। परन्तु उन्हें जब अनुभव कराया गया कि अपनी बात जनभाषा में कहने से सन्देश ज्यादा लोगों तक जायेगा तो उन्होंने हिन्दी को अपनाने में तनिक भी संकोच का अनुभव नहीं किया और यहाँ तक कि अपने सारे ग्रन्थ भी हिन्दी में ही प्रणीत किए। परमपिता परमात्मा का ज्ञान, संस्कृत ज्ञान के लोप होने के कारण मुट्ठी भर लोगों की काराओं में कैद होकर रह गया था। ऋषि दयानन्द ने उसको उन्मुक्त करते हुए अपना वेदभाष्य संस्कृत के अलावा हिन्दी में भी प्रस्तुत किया ताकि आमजन भी वेद में क्या है इस बात को जान सकें। यह स्वामी जी का क्रान्तिकारी और अभिनव प्रयोग था और यह हिन्दी मनीषियों के लिए अभूतपूर्व देन थी। उन्हें अपने पाण्डित्य प्रदर्शन का तनिक भी लालच नहीं था। चाहते थे तो केवल यह कि जन–जन वेदों की शिक्षाओं का अनुसरण करने लगे तो, यह भूतल स्वर्ग हो जाये।

सरस्वती सम्प्रदाय के संन्यासी उस समय केवल कोपीन धारण करके घूमते थे। परन्तु जब उनके संज्ञान में लाया गया कि उनको जब प्रवचन समाज के लोगों के समक्ष, नर–नारियों के समक्ष देने हैं तो अच्छा हो वे पूर्ण वस्त्रों को धारण करें तब जिस साहस को आज भी अनेक तर्कशील कहे जाने वाले साधु नहीं कर पाते हैं और अपनी मजहबी मान्यताओं से लिपटे रहते हैं, वहाँ दयानन्द ने कमाल कर किया और सम्पूर्ण वस्त्र पहनने का निश्चय किया। अनेक अभिनव प्रयोग इस क्रान्तिकारी संन्यासी ने किए। विश्व का सबसे पहला धर्म सम्मेलन दिल्ली में इस दृष्टि से आहूत किया कि प्रत्येक मजहब के वरिष्ठजन यदि आपस में विचार–विमर्श करके एक सत्य को अपनाने पर सहमत हो जाते हैं तो फिर मतजन्य विद्वेष के पनपने का अवसर ही समाप्त हो जाता है। यह बात पृथक् है कि अनेक कारणों से उनको सम्पूर्ण सफलता नहीं मिली।

इस संक्षिप्त आलेख में स्वामी जी की उन सारी विशेषताओं को लिख पाना कतई संभव नहीं है जिनके कारण निःसंकोच कहा जा सकता है कि दयानन्द तो अपने जैसा एक ही था।

पाठकगण यदि ऋषि दयानन्द के जीवन के अंतिम दो तीन वर्षों पर ध्यान दें तो भी एक नूतन और अभिनव प्रयोग ऋषि दयानन्द द्वारा प्रवर्तित उन्हें दिखाई दे सकेगा वो उनकी इस धारणा में निहित है

'यथा राजा तथा प्रजा'। ऋषि दयानन्द ने समझ लिया था कि प्रजा राजा का ही अनुसरण करती है अतः यदि राजा का सुधार हो जाये तो प्रजा के सुधार में उतनी समस्या नहीं आयेगी। अतः ऋषि दयानन्द जी महाराज ने अपने अंतिम समय में अधिकतम समय राजस्थान के रजवाड़ों में गुजारा था। उनकी योजना थी कि 'यथा राजा तथा प्रजा' के अनुसार अगर इन नरेशों को सुधार के मार्ग पर अग्रसित कर दिया जाए तो प्रजा को भी वैदिकधर्मी बनने में देर नहीं लगेगी। इसीलिए उन्होंने उदयपुर, शाहपुरा तथा जोधपुर को पर्याप्त समय दिया। उदयपुर प्रवास के दौरान महर्षि दयानन्द ने अनेक महत्वपूर्ण कार्य किए। महाराणा सज्जन सिंह जी अल्प समय में ही उनके व्यक्तित्व से प्रभावित होकर उनके अन्यतम शिष्य बन गए थे और वे प्रतिदिन राजनीति एवं धर्मशास्त्र को पढ़ने के लिए अपने सामन्तों सहित श्री महाराज के पास नियमित आते थे। दक्षिणी राजस्थान के आदिवासी क्षेत्र में अनेक सुधारों के सूत्रपात करने वाले गोविन्द गुरु भी यहीं नवलखा महल में महर्षि दयानन्द के सम्पर्क में आये थे और उन्होंने यहीं से प्रेरणा प्राप्त कर एक विशाल आन्दोलन आदिवासियों के चतुर्दिक उन्नयन के लिए चलाया था। इस छह महीने के प्रवास में ही महर्षि दयानन्द ने जिस प्रकार से महाराणा जी और यहाँ के शासन कार्य को प्रभावित किया उससे प्रमाणित होता है कि उनकी सोच गलत नहीं थी।

ऋषि दयानन्द की स्पष्ट सोच थी कि अगर इन देशी राजाओं में स्वाभिमान के भावों को जाग्रत किया जाए तथा उनमें प्रजापालन, धर्मरक्षा तथा स्वदेश के प्रति अनुराग के भाव को बढ़ावा दिया जाए तो देश के उत्थान में इनकी भूमिका निर्णायक सिद्ध हो सकती है।

स्वामी जी ने यहाँ के राजकार्यों में हिन्दी एवं संस्कृत को अधिकाधिक प्रविष्ट कराने का प्रयास किया। मेवाड़ राज्य के राजपत्र का नाम भी स्वामी जी के परामर्श के अनुसार 'सज्जन कीर्ति सुधाकर' रखा गया। इसी प्रकार राज्य की सर्वोच्च शासन परिषद् को 'महद् राजसभा', वन विभाग को 'शैल कान्तार सभा', उद्योग विभाग को 'शिल्प सभा' का नाम दिया गया। स्वेदशी एवं गोरक्षा के प्रति भी स्वामी जी ने प्रेरणा दी। गोवध को बन्द कराने के लिए स्वामी जी 3 करोड़ भारतवासियों के हस्ताक्षर से एक अपील महारानी विक्टोरिया को भेजना चाहते थे। इसके लिए जो आवेदन पत्र तैयार किया गया था उस पर महाराणा सज्जनसिंह जी ने भी हस्ताक्षर किए थे।

स्वामी जी के परामर्श से ही मेवाड़ के न्यायालयों में देवनागरी लिपि के प्रयोग तथा अभिलेखों में अरबी, फारसी शब्दों के स्थान पर संस्कृत के तत्सम् शब्दों को प्रयुक्त किए जाने की दिशा प्रशस्त हुई। यहीं पर, देश में राष्ट्रीय एकता कैसे संभव हो सकती है इसका स्पष्ट उत्तर पंडित मोहनलाल पण्ड्या को स्वामी जी ने दिया कि जब तक समस्त देशवासी एक धर्म के अनुयायी, एक भाषा के बोलने वाले और एक ही प्रकार के आचार–विचार एवं व्यवहार को धारण कर एक ही लक्ष्य की पूर्ति के लिए सर्वात्मना निश्चय नहीं कर लेते तब तक स्वदेश की एकता और इसकी सर्वांगीण उन्नति स्वप्न मात्र रहेगी। इस प्रकार स्वामी जी के इस प्रवास में किए गए कार्यों का मेवाड़ के शासक व सामन्तों पर व्यापक प्रभाव पड़ा।

यह हमारा प्रबल दुर्भाग्य था कि अखण्ड ब्रह्मचर्य से ज्योतित उस बलिष्ठ महापुरुष की आयु जहाँ एक सौ से भी ज्यादा वर्ष होनी चाहिए थी जिसके बारे में जोधपुर में उनके पैरों को दबाने वाले व्यक्ति का मत था कि मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि मैं किसी लोहे को दबा रहा हूँ, वहाँ उन्हें एक व्यापक षड्यंत्र का शिकार होकर केवल 59 वर्ष की आयु में अपना कार्य अधूरा छोड़कर महाप्रयाण करना पड़ा। काश कि ऋषि दयानन्द चारों वेदों का भाष्य कर पाते। जीवन के अंतिम दस वर्षों में उन्होंने जितना कार्य किया उसको देखते हुए यह सोचना भी समीचीन है कि केवल दस वर्ष भी अगर कार्य के लिए उन्हें और मिल जाते तो इस देश में ही नहीं पूरे विश्व में अंधकार का समूल नष्ट होकर सूर्य के समान प्रकाश फैल जाता। परन्तु ऐसा न हो सका, इसीलिए कवि ने बिल्कुल ठीक कहा 'कहने को तो दीवाली थी सचमुच में वो दिवाला था।'

1883 की दीपावली के दिन एक दीपक बुझ गया परन्तु बुझने से पहले वह हजारों लाखों दीपकों को जलाकर के अपने कर्तव्य को पूर्ण करके गया। अब बारी हमारी है कि उस ज्योति को जलाये रखें। ऋषि दयानन्द के सन्देश को बाहर से नहीं हृदय से हृदयंगम करने का दृढ़ निश्चय करें। अगर ऐसा हो जाये तो आज भी वो दिन दूर नहीं जब ऋषि द्वारा दिए गए सत्य ज्ञान के प्रकाश में चुनौती देती हुए समस्त समस्याओं का निराकरण हो सके।

चलभाष– 09314235101, 08005808485

सार्वदेशिक सभा के उपमंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के कार्यकारी प्रधान,

कर्मठ आर्यनेता श्री राम सिंह आर्य जी का निधन

श्री राम सिंह आर्य जी की स्मृति में आयोजित श्रद्धांजलि सभा में सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने अर्पित किये श्रद्धा सुमन

विभिन्न स्थानों पर निरन्तर श्रद्धांजलि सभाओं का हो रहा है आयोजन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के उपमंत्री तथा आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के कार्यकारी प्रधान, आर्य वीरदल राजस्थान के प्रदेशाध्यक्ष और विभिन्न आन्दोलनों से जुड़े प्रसिद्ध समाजसेवी श्री राम सिंह आर्य जी का 2 नवम्बर, 2020 को मथुरादास माथुर अस्पताल में इलाज के दौरान निधन हो गया। वे 72 वर्ष के थे। शहर विधायक मनीषा पंवार के पूज्य पिता तथा क्रांतिकारी विचारक श्री राम सिंह आर्य जी लगभग एक माह से अस्वस्थ चल रहे थे। बाद में वे कोरोना से भी ग्रसित हो गये। श्री राम सिंह आर्य युवाओं के प्रेरणास्रोत थे, वे कुशल संगठक एवं जुझारू आर्यनेता थे। उन्होंने जातिवाद, छुआछूत व भेदभाव मिटाने के लिए कठिन संघर्ष किया था। वे एक लेखक, ओजस्वी वक्ता तथा आर्यनेता के रूप में प्रसिद्ध थे। उन्होंने आर्य युवा संगठन को मजबूत बनाने में सक्रिय भूमिका निभाई थी।

श्री राम सिंह आर्य जी का अन्तिम संस्कार 3 नवम्बर, 2020 को कागा श्मशान घाट पर सैकड़ों व्यक्तियों की उपस्थिति में पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। इससे पूर्व मोहनपुरा स्थित स्मृति भवन से उनकी शव–यात्रा एक जुलूस के रूप में निकाली गई जिसमें आर्य वीरदल जोधपुर की पूरी टीम श्वेत ड्रेस में साथ चल रही थी, उनके अतिरिक्त सैकड़ों व्यक्ति जय घोष के नारे लगाते हुए शव–यात्रा में शामिल थे। अन्तिम संस्कार में छोटे भाई जितेन्द्र सिंह, बड़ी सुपुत्री शहर विधायक श्रीमती मनीषा पंवार एवं उनके पति श्री दीपक सिंह, छोटी सुपुत्री श्रीमती हिमांशी आर्या एवं उनके पति श्री अमित सिंह, भतीजे श्री मानवेन्द्र सिंह एवं श्री यादवेन्द्र सिंह, दोहिते श्री कुलवंत सिंह एवं श्री यशवर्धन सहित परिवारजनों ने मुखाग्नि दी।

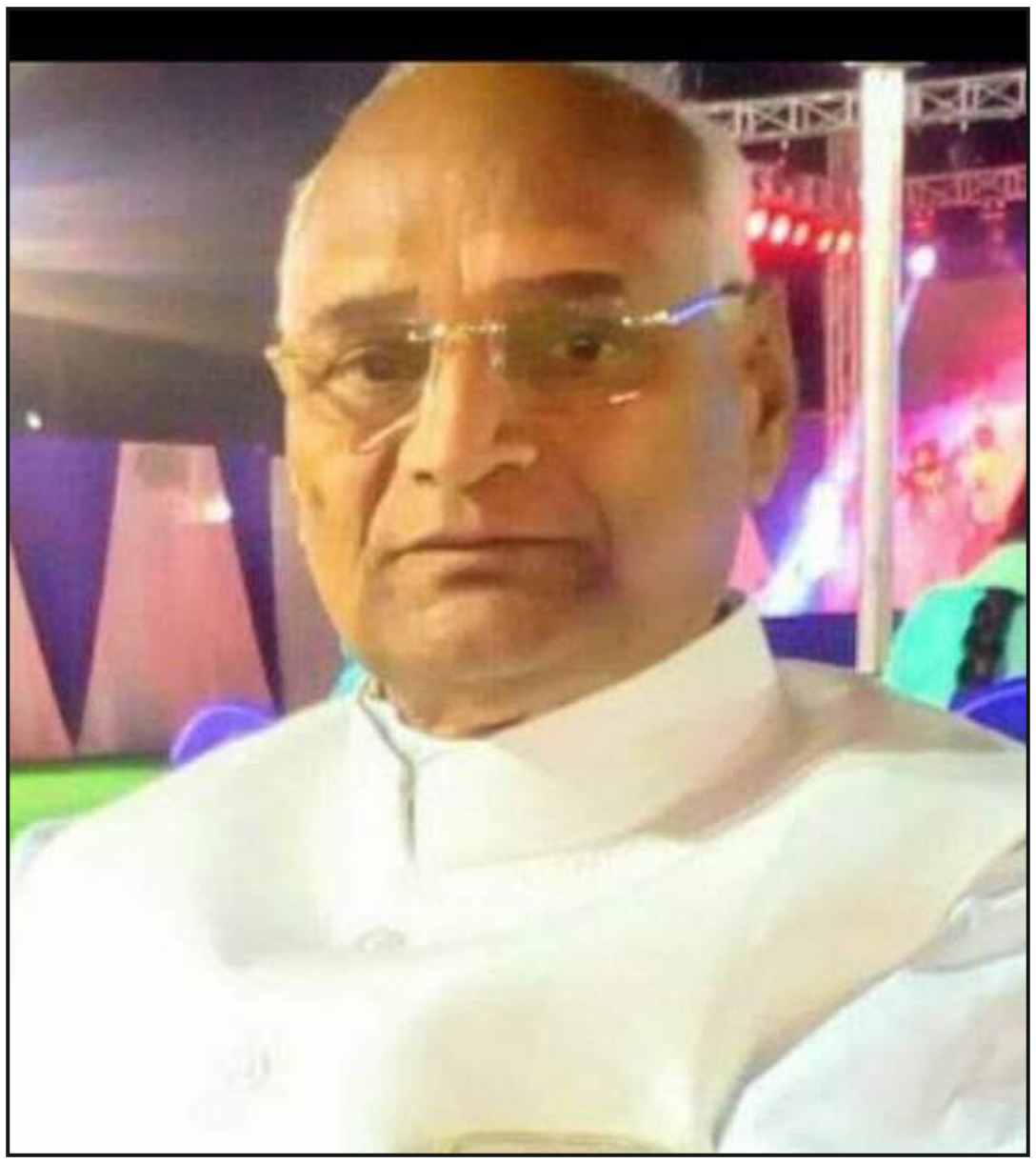

श्री राम सिंह आर्य के निधन पर मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत, विधायक श्री पुखराज गर्ग, श्री पवन मेहता, श्री शम्भू सिंह मेड़तिया, श्री हेमन्त शर्मा सहित नगर के अनेक जनप्रतिनिधियों व विभिन्न संगठनों के पदाधिकारियों ने शोक जताया।

श्री राम सिंह आर्य जी की स्मृति में 4 नवम्बर, 2020 को उम्मेद चौक स्थित गोलनाड़ी पर श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर भारी संख्या में आर्य विचारकों, आर्य वीरों, विभिन्न दलों के नेताओं एवं विभिन्न संगठनों के पदाधिकारियों तथा गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया। श्रद्धांजलि सभा में मुख्यरूप से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के महामंत्री श्री बिरजानन्द आर्य बहरोड़, आर्य युवक परिषद् हरियाणा के प्रधान ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य, उप सचेतक राजस्थान विधानसभा व प्रभारी मंत्री जोधपुर श्री महेन्द्र सिंह चौधरी, शहर काजी सैय्यद वाहिद अली, पार्षद् श्री योगेश गहलोत, श्री राम सिंह साँजू, पूर्व पार्षद् श्री करण सिंह, पूर्व सांसद श्री बद्रीराम जाखड़, पूर्व महापौर डॉ. ओम कुमारी गहलोत, पूर्व जी.डी.ए. अध्यक्ष श्री राजेन्द्र सोलंकी, श्री अनिल टाटिया, श्री नारायण सिंह आदि उपस्थित थे।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए जीवन–मृत्यु की दार्शनिक व्याख्या करते हुए कहा कि मृत्यु एक शाश्वत सत्य है और अपने सद्कर्मों द्वारा ही जीवन को सार्थक बनाना सम्भव है। उन्होंने कहा कि स्व. श्री राम सिंह आर्य जी ने अपने सद्कर्मों के माध्यम से जीवन–पर्यन्त मानवता की सेवा कर मनुर्भव का बहुत सुन्दर उदाहरण प्रस्तुत किया है। संघर्षशील व्यक्तित्व के धनी श्री राम सिंह आर्य जीवन–पर्यन्त महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा चलाये गये अभियान को कठिन परिश्रम के साथ आगे बढ़ाते रहे। उन्होंने आर्य समाज द्वारा चलाये गये अनेकों आन्दोलनों जैसे सती प्रथा आन्दोलन, बंधुआ मुक्ति आन्दोलन, नाथद्वारा मंदिर प्रवेश आन्दोलन, शराबबन्दी आन्दोलन जैसे अनेकों आन्दोलनों में सक्रिय भूमिका निभाई थी। उनके निधन से आर्य समाज की अपूर्णीय क्षति हुई है। वे मेरे अनन्य सहयोगी थे। अतः मुझे व्यक्तिगत रूप से बहुत गहरा धक्का लगा है। उनकी आत्मा की सद्गति और पारिवारिकजनों को इस दारूण व्यथा को सहन करने की शक्ति प्रदान करने की परमपिता परमात्मा से मैं प्रार्थना करता हूँ।

श्री राम सिंह आर्य जी की स्मृति में अनेकों स्थानों पर श्रद्धांजलि सभाओं का आयोजन किया गया जिसमें जिला मुक्केबाजी बुशू एसोसिएशन द्वारा शहीद भगत सिंह, हाईफा हीरो स्मारक स्थल पर श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर उनकी स्मृति में पौधारोपण भी किया गया। मंडोर में आर्य समाज परिसर में सर्वधर्म सभा का आयोजन किया गया जिसमें भारी संख्या में हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई धर्मगुरुओं ने भाग लेकर श्री राम सिंह जी को श्रद्धा सुमन अर्पित किये। आर्य वीरदल जोधपुर की ओर से आयोजित श्रद्धांजलि सभा में गणमान्य व्यक्तियों ने श्री राम सिंह आर्य की अनुकरणीय जीवन गाथा के क्षणों को साझा किया।

आर्य समाज शिवगंज में रविवार को शांति यज्ञ का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्री हरदेव आर्य ने अपने विचार व्यक्त किये। श्री सचिन शास्त्री ने श्री राम सिंह जी के जीवन पर प्रकाश डाला। सिटीजन सोसाईटी फॉर एजुकेशन की ओर से सिवाची गेट गढ़ी स्थित स्वामी कृष्णानन्द सभागार में आयोजित श्रद्धांजलि सभा में सैकड़ों लोगों ने श्री राम सिंह आर्य जी को श्रद्धा सुमन अर्पित किये।

आर्य वीरदल और आर्य समाज जालौर के तत्वावधान में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया जिसमें श्री दलपत सिंह आर्य, श्री शिवदत्त आर्य, श्री विनोद कुमार आर्य, श्री प्रशान्त सिंह आदि ने श्री रामसिंह आर्य के अपने उद्गार व्यक्त करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित की। इसी प्रकार आर्य समाज बालोतरा, जिला–बाड़मेर, आर्य वीरदल पाली, आर्य समाज आदर्श नगर, जयपुर आदि स्थानों पर भी श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। श्री अशोक आर्य कार्यकारी प्रधान महर्षि दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर, प्रो. विट्ठलराव आर्य मंत्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली, श्री आर. एस. तोमर अध्यक्ष सार्वदेशिक न्याय सभा, श्री अनिल आर्य उपप्रधान सार्वदेशिक सभा, नई दिल्ली, श्री रामानन्द प्रसाद आर्य, उपप्रधान बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा पटना, श्री गोविन्द सिंह भण्डारी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड, श्री आर्य कुमार ज्ञानेन्द्र भुवनेश्वर, श्री विनय आर्य मंत्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, श्री अश्विनी शर्मा प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, डॉ. वीरेन्द्र पंवार प्रबन्धक आर्य समाज हरिद्वार, स्वामी श्रद्धानन्द पलवल, स्वामी नित्यानन्द उपमंत्री सार्वदेशिक सभा, बेटी बचाओ अभियान की अध्यक्षा बहन पूनम आर्या एवं संयोजक बहन प्रवेश आर्या, स्वामी रामवेश जी अध्यक्ष नशाबन्दी परिषद् हरियाणा, श्री राम निवास आर्य पूर्व प्रधान आर्य युवक परिषद् हरियाणा, श्री हवा सिंह आर्य एडवोकेट प्रधान व श्री कमलेश आर्य मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, डॉ. लक्ष्मणदास आर्य प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य भारत, श्री देवेन्द्र पाल वर्मा लखनऊ, श्री रमाकान्त सारस्वत अन्तरंग सदस्य सार्वदेशिक सभा, श्री जानकी प्रसाद शर्मा धर्माचार्य आर्य समाज आदर्शनगर, जयपुर आदि ने भी अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

श्री राम सिंह आर्य जी की अन्तिम यात्रा तथा श्रद्धांजलि सभा के कुछ दृश्य

प्रकाश पुंज ! तुम्हें प्रणाम

- वेदाचार्य डॉ. रघुवीर वेदालंकार

दीपक से किसी ने पूछा नन्हें से दीपक? तुम क्यों जल रहे हो। अनवरत बिना थके तुम यह तपस्या क्यों कर रहे हो। दीपक बोला - क्या तुम्हें मेरा लक्ष्य दिखलायी नहीं देता। मैं जगतव्यापी अन्धकार के साथ युद्ध कर रहा हूँ। अन्धकार को दूर भगाकर मैं संसार को प्रकाश देना चाहता हूँ। कैसा प्रकाश! सत्य का प्रकाश ओह! यह बात है तो क्या तुम विश्वव्यापी अन्धकार पर विजय प्राप्त कर लोगे। क्या तुम्हारे इस साहस पर लोग हंसेंगे नहीं? इतना ही नहीं अपितु वे तो तुम्हारे ऊपर कंकड़-धूल की वर्षा करेंगे। वे तुम्हें फूंकमार कर बुझा देना चाहेंगे और कुछ ऐसे भी होंगे जो तुम्हें चकनाचूर करके समूल नष्ट कर देना चाहेंगे। इतनी सम्भावना होने पर भी तुम यह अदम्य साहस किस लिए कर रहे हो।

दीपक का उत्तर था - यह सब कुछ होगा मैं जानता हूँ फिर भी मैं यह संकटपूर्ण कार्य कर रहा हूँ क्योंकि प्रकाश देना मेरा धर्म है, मेरा व्रत है। मैं इसे नहीं छोड़ सकता। मैं जलता हूँ, परहित में सतत जलता हूँ, किन्तु जलकर भी प्रकाश देता हूँ। संसार का पथ प्रदर्शक बनता हूँ और तुम नहीं जानते कि मेरे इसी व्रत के कारण, मेरी इसी सत्य निष्ठा के कारण, मेरी इसी अडिगता-निर्भयता के कारण तो महर्षि दयानन्द जैसे बाल ब्रह्मचारी ब्रह्म योगी भी मेरा उदाहरण देते हुए कहते हैं - चाहे मेरी एक-एक अंगुली को बत्ती बनाकर दीपक में जला दिया जाये फिर भी मैं राजस्थान प्रचार करने अवश्य जाऊँगा। और सचमुच उन्होंने वही किया जो कि कहा था। उनके साथ वही हुआ जिसकी सम्भावना थी। कृतघ्न-निष्ठुर लोगों ने उस प्रकाशपुञ्ज को समाप्त कर दिया। इतना ही नहीं अपितु उनके ऊपर भी धूल-कंकड़-पत्थर फेंके गये। उन पर आक्रमण किये गये। उन्हें अपमानित किया गया। जब एक चेतन व्यक्ति ने इन सबकी परवाह नहीं की तो मैं एक जड़ पदार्थ इन सबकी क्यों परवाह करूँ। मेरा धर्म है प्रकाश देना और वह मैं दे रहा हूँ।

यह मत समझो कि मैं मिट्टी का हूँ, कमजोर हूँ, छोटा हूँ तो मैं इस विशाल संसार को क्या प्रकाश दे सकूंगा। लोग मुझे तोड़ देंगे। मिट्टी से तो सभी प्राणी बने हैं किन्तु जो इस मिट्टी के घर में दिये आत्मतत्व को पहचान लेता है फिर वह इस पार्थिव शरीर की चिन्ता नहीं करता। दयानन्द ने यही किया था। उन्होंने भरी सभा में घोषणा पूर्वक कहा था 'लोग मुझे भय देते हैं, यह मत कहो, वह मत कहो। कलेक्टर नाराज हो जायेगा। कमिश्नर नाराज हो जायेगा। अरे! कोई मुझे वह सूरमा बतलाए जो मेरी आत्मा का नाश कर सके। और जब तक ऐसा नहीं है तब तक यह सम्भव नहीं कि मैं सत्य के मार्ग से हट जाऊँ। मैं छोटा भी नहीं हूँ। व्यक्ति विचारों से ही छोटा या महान बनता है। उन विचारों के आधार पर किये गये कार्यों से ही देव या भगवान बनता है, शरीर के आकार से नहीं। इसलिए मेरे कार्य को देखो। मेरे संकल्प को देखो। अपने इस संकल्प के कारण ही मैं पर्वत के समान अडिग हूँ। दयानन्द में यही संकल्प तो था जिसके आधार पर यह विश्वव्यापी पाखण्ड से भिड़ गया। पाखण्डियों के सामने अड़ गया। जानते हो, सत्य का उपासक, सत्य पर आरूढ़ व्यक्ति किसी की सहायता पर निर्भर नहीं रहता। वह संकटों से, दुष्टों से हत्यारों से भी नहीं घबराता। वह अपने पथ पर अडिग होकर स्थिर गति से बढ़ा चला जाता है। किसके सहारे? उसी विश्वव्यापिनी शक्ति के सहारे जिसे हम परमेश्वर कहते हैं। दयानन्द ने यही किया। संसार का बड़े से बड़ा प्रलोभन, बड़े से बड़ा भय उस निर्भीक मस्त योगी को अपने मार्ग से नहीं हटा सका क्योंकि वह इस समस्त कार्य को अपना नहीं अपितु परमेश्वर की आज्ञा मानकर कर रहा था। ऐसा था, तभी तो अन्तिम समय में आज दीपावली के अन्तिम समय में वह शान्ति से कह सका 'हे दयामय ईश्वर तेरी यही इच्छा है। तेरी इच्छा पूर्ण हो। तेरी अद्भुत लीला है।'

यह उस योगी का स्वरूप था। वह एक जाज्वल्यमान प्रकाश पुञ्ज था जो अभी भी हमें प्रकाश प्रदान कर रहा है। हमारा मार्ग प्रशस्त कर रहा है। मैं तो एक छोटा सा दीपक हूँ किन्तु मुझे गर्व है कि मैं उसी ऋषि के मार्ग पर चल रहा हूँ। यह विश्वव्यापी अन्धकार दूर हो सके, मैं इसलिए तो जल रहा हूँ। अब कहो, तुम्हें मेरा कार्य कैसा लगा। मेरा व्रत कैसा लगा। दीपक? तुमने तो मेरी आंखें खोल दी। तुम छोटे नहीं हो, अकेले नहीं हो। तुम्हारा अडिग, महान संकल्प तुम्हारे साथ है। तुम दीपक नहीं, प्रकाश पुञ्ज हो। तुम्हें प्रणाम।

दयानन्द! तुमने भी तमसो मा ज्योतिर्गमय का अनुसरण करके संसार को प्रकाश देना चाहा। इसके लिए तुमने सब कुछ सहन किया। अपने जीवन को, अपने शरीर को भी 'इदन्नमम' कह दिया। तुमने अज्ञान अन्धकार को मिटा कर प्रकाश फैलाने के लिए अपने जीवन को भी स्वाहा कर दिया। यह सब व्यर्थ नहीं गया। प्रकाश, सत्य का प्रकाश, सत्यार्थ प्रकाश, न केवल भारत में ही, अपितु विदेशों में भी खूब फैला किन्तु एक प्रश्न मैं तुमसे ही पूछता हूँ कि वह प्रकाश अब मन्द क्यों होता जा रहा है। क्यों सिकुड़ता जा रहा है। शायद तुम इसका उत्तर दे सको। मैं तो केवल इतना ही कह सकता हूँ -

प्रकाश पुञ्ज तुम्हें प्रणाम

- बी-266 सरस्वती विहार,
दिल्ली-34

जगमग दीप जलाएँ

आओ! आर्य सपूतों आओ! जगमग दीप जलाएँ।
गहन तिमिर में भटक रही, जगती को राह दिखाएं।।
मिट्टी के दीपों से निश्चय, मिटता नहीं अन्धेरा,
अगणित तारों के उगने से, होता नहीं सबेरा।
दानवता के तिमिरतैन्य ने, महिमामण्डल है घेरा,
रहा नहीं है मानवता का, सुन्दर सुखद बसेरा।
बिखरा किरणें ज्ञान ज्योति की, नया सबेरा लाएं।
गहन तिमिर में भटक रही, जगती को राह दिखाएं।।
तम के अंचल में सोता है, आज यहाँ दिनमान,
ज्ञान हमारा कहांलुप्त है, विस्तृत क्यों अज्ञान?
चलो, देख लो, कहांसो रहा, भारत का अभिमान,
सत्य शिवम् सुन्दरता पुरित, कहां गए प्रतिमान?
बन करके आलोक पुंज हम, जाग्रत ज्योति जगाएं।
गहन तिमिर में भटक रही, जगती को राह दिखाएँ।।
लोभ-मोह-मद मत्सर का, है फैला पारावार,
काम-क्रोध बढ़ रहा चैतुर्दिक, नष्ट धर्म का सार।
मानवता के तत्वों को क्यों? होता है व्यापार।
भौतिक संस्कृति नहीं कभी, कर सकती है उपचार।
धर्माध्यात्म प्रदीप प्रभाहम, पुनः प्रदीप्त कराएं।
गहन शिविर में भटक रही, जगती को राह दिखाएँ।।
ऐसा दीप जले जिससे, न रहे तिमिर का लेश।
ज्योतिर्मय हो पूर्ण धरा, यह प्रगटे ज्ञान दिनेश।।
दम्भ द्वेष-मिथ्या हिंसा का बचे नहीं अवशेष,
प्रेम-दया ममता का, सदा रहे उन्मेष।
शांति सफलता समृद्धि के संगीत मनुज सब गाएं।
गहन तिविर में भटक रही जगती को राह दिखाएँ।।

- राधेश्याम आर्य विद्यावाचस्पति
मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उत्तर प्रदेश)

भारतीय समाज के सामाजिक परिवर्तन और समाज सुधार में–

स्वामी दयानन्द का वैज्ञानिक दृष्टिकोण

– डॉ० चन्द्रपाल सिंह

सामाजिक परिवर्तन और समाज सुधारः–

परिवर्तन समाज का एक अनिवार्य नियम है। आदिकाल से ही समाज में परिवर्तन होते रहे हैं, चाहे मनुष्य ने उन हो रहे परिवर्तनों के प्रति संवेदनशीलता दिखाई या नहीं। भारतीय समाज भी परिवर्तन के इस नियम से अछूता नहीं रहा, परन्तु शताब्दियों की राजनैतिक पराधीनता के कारण इन परिवर्तनों के प्रति उसमें कुछ असंवेदनशीलता आ गई। इसके परिणामस्वरूप भारतवासियों को दुर्बलता, दरिद्रता, हीनभावना तथा अन्य विकारों का शिकार बनना पड़ा। राजनैतिक, आर्थिक तथा धार्मिक उत्पीड़न एवं आत्मबोध के अभाव ने भारतीय समाज में बहुत–सी ऐसी कुण्ठाओं को जन्म दिया जिनका सहज उन्मूलन सम्भव नहीं था।

विदेशी शासन से, चाहे वह मुस्लिम रहा हो या ब्रिटिश, उत्पन्न पराजय–भाव ने भारत के विशाल हिन्दू समाज के धार्मिक, आध्यात्मिक तथा नैतिक मूल्यों को अपूरणीय क्षति पहुँचायी। सहस्राब्दियों पूर्व के वैदिक, औपनिषदिक, रामायण तथा महाभारतकालीन समाज द्वारा दी गयी स्वस्थ चिन्तन व संस्कार युक्त परम्परा अतीत की वस्तु बनकर रह गयी जो केवल पुस्तकों तथा कथाओं तक सीमित रही। भारत की सामाजिक पृष्ठभूमि पर इसका बहुत गहरा प्रभाव पड़ा तथा धर्म और समाज के बीच असन्तुलन उत्पन्न होने लगा। इस स्थिति का समाज के कुछ प्रभावशाली लोगों ने अनुचित रूप से उपयोग किया तथा अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए धर्म के नाम पर कर्मकाण्ड, नैतिकता के नाम पर मिथ्या अन्धविश्वास, श्रम तथा कार्य–विभाजन के नाम पर विशेष वर्गों के शोषण का प्रचार किया। इसके परिणामस्वरूप समाज में सर्वत्र संकीर्णता, अनुदारता तथा जड़ता फैलने लगी जिसने बाल–विवाह, नारी–स्वाधीनता का अपहरण विधवाओं पर अत्याचार, ऊँच–नीच की भावना पर आधारित छूत–अछूत में विभाजन, बहु–विवाह प्रचलन, दलित व निम्न वर्ग पर अत्याचार, मांसाहार व मद्य–प्रयोग को धर्म व संस्कृति से जोड़ना आदि सामाजिक बुराईयों को जन्म दिया। ये सामाजिक बुराईयाँ व कुरीतियाँ भारतीय समाज में घुन की तरह लगीं तथा किसी समय के सुदृढ़, स्वस्थ व प्रगतिशील भारतीय समाज को इतना जर्जर व खोखला बना दिया कि वह विदेशी आक्रमण तथा परकीय अत्याचारों का सामना करने में असमर्थ हो गया। भारतीय समाज की इस अधोगति तथा सामाजिक विघटन के लिए बाह्य शक्तियों के साथ–साथ हिन्दू समाज में आये मिथ्या विश्वास, कुरीतियाँ व कुप्रथायें, रूढ़िग्रस्त व जड़ विश्वास भी जिम्मेदार थे! यह किसी समाज की वह अवस्था थी जहाँ उसमें परिवर्तन लाने के लिए बड़े स्तर पर समुदाय के मौलिक मूल्यों व सामाजिक संस्थाओं को प्रभावित करना आवश्यक हो गया था। समाज के पतन को रोकने के लिए समस्त समुदाय की जीवनधारा में परिवर्तन, व्यक्तियों एवं समूहों की आवश्यकताओं को जानकर उनका अध्ययन व विश्लेषण करके उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति तथा उनके सर्वांगीण विकास में सहायता करना ही समाज–सुधार का उद्देश्य है तथा समाज–सुधार की एक वैज्ञानिक विधि है। स्वामी दयानन्द ने एक धर्म–संशोधक व धर्म–व्याख्याता के साथ–साथ एक समाजशास्त्री के रूप में भारतीय समाज की इस अवस्था को पढ़ा, जाना और उसे सुधारने का प्रयत्न किया।

समाज-सुधार क्या है?

समाज–सुधार सामाजिक परिवर्तन का एक प्रमुख अभिकरण है जिससे समाज में व्याप्त कुप्रथाओं, बुराईयों व कुरीतियों को समाप्त करने के लिए समाज को अज्ञानता व अन्धकार से बाहर निकालने का प्रयत्न किया जाता है। समाज–सुधार का मुख्य उद्देश्य समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाना है, एक ऐसा परिवर्तन जिससे समुदाय के मौलिक मूल्य व संस्थाएं प्रभावित होती हैं। समाज–सुधार द्वारा समस्त समुदाय की जीवन–धारा में परिवर्तन लाने के लिए आन्दोलन चलाए जाते हैं जिनका मुख्य उद्देश्य सामाजिक कुरीतियों व कुप्रथाओं को दूर कर सामाजिक व्यवस्था को वर्तमान परिस्थितियों के अनुकूल बनाना होता है जिससे समाज प्रगति कर सके।

स्वामी दयानन्द के समाज-सुधार में वैज्ञानिक आधार

भारतीय समाज में हो रहे नकारात्मक परिवर्तनों ने महर्षि दयानन्द को बहुत गहराई से प्रभावित किया। उन्होंने भारतीय समाज के धार्मिक दृष्टिकोण के साथ–साथ उसकी सामाजिक परिस्थितियों तथा एक साधारण व्यक्ति की व्यथाओं व परेशानियों का वैज्ञानिक अन्वेषण किया। इसीलिए स्वामी जी द्वारा किये गये समाज–सुधार चाहे वह नारी–उत्थान के विषय में हो या हिन्दू समाज में व्याप्त कुरीतियों व कुप्रथाओं अथवा मूर्तिपूजा या कर्मकाण्डों का खण्डन हो, सभी वैज्ञानिकता की कसौटी पर कसे गये। भारतीय समाज के पुनर्जागरण में स्वामी दयानन्द के योगदान में जहाँ धर्म–सुधार एक आधार था वहीं इस समाज व मनुष्य की सामाजिक मनःस्थितियों का वैज्ञानिक अध्ययन तथा सोच के द्वारा इसमें परिवर्तन लाने का एक महत्वपूर्ण प्रयत्न भी।

उन्नीसवीं सदी में ही भारतीय समाज की क्षति को रोकने के लिए स्वामी जी ने एक समाजशास्त्री की भूमिका निभाई तथा समाज को सशक्त बनाने का प्रयत्न किया। उनके समाज–सुधार–सम्बन्धी कार्य तत्वज्ञान और यथार्थता के सिद्धान्तों पर आधारित थे जिनमें मानव–समाज की छोटी से छोटी विकृति की ओर भी ध्यान दिया गया। शिवरात्रि के पर्व पर शिव प्रतिमा का चूहे द्वारा किये गये अपमान की एक साधारण प्रतीत होने वाली घटना ने न केवल स्वामी दयानन्द के जीवन को असाधारण मोड़ दिया अपितु भारत के धार्मिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक जगत् में क्रान्ति का सूत्रपात किया। स्वामी दयानन्द के हृदय में सुधारों की भावना का प्रारम्भ मूर्ति की सत्ता में अश्रद्धा होने से हुआ। यह ईश्वर–सम्बन्धी अशुद्ध विचारों के विषय में उनका पहला कुठाराघात था।

स्वामी जी के समाज–सुधार में एक महत्वपूर्ण बात यह थी कि वे समाज में परिवर्तन लाने के लिए मनुष्य को अपनी बुद्धि, विवेकशक्ति तथा चिन्तन–प्रणाली का प्रयोग करने के लिए कहते थे तथा उसके लिए उसे उचित वातावरण भी देने का प्रयत्न करते थे। यह उनके प्रगतिशील विचारों तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण का प्रमाण है। यहाँ मैं १ जुलाई १८७७ को प्रकाशित 'बिरादरे हिन्द' में स्वामी जी के विषय में छपे एक लेख को उद्धृत करना चाहता हूँ जिसमें उनके उदार, सुसंस्कृत एवं प्रगतिशील विचारों को प्रस्तुत किया गया है– '' ..... उनके विचार प्रायः उदार तथा अधिकांश विचार इस समय के विद्वतापूर्ण विचारों के अनुकूल हैं। मस्तिष्क उनका अत्यन्त प्रगतिशील प्रतीत होता है। इस व्यक्ति के हृदय में राष्ट्रीय सहानुभूति और राष्ट्रीय सुधार का बहुत बड़ा उत्साह स्पष्ट दिखाई देता है। धार्मिक सुधार की दृष्टि से यह व्यक्ति मूर्तिपूजा का बहुत बड़ा शत्रु है और उन लोगों में से है जो इन दिनों मूर्तिपूजा को जड़ से उखाड़ने का प्रयत्न कर रहे हैं, इस व्यक्ति को इस समय का बहुत बड़ा मूर्तिभंजक कहें तो अनुचित न होगा। जहाँ तक धार्मिक सुधारों का प्रश्न है, ब्रह्म–समाज भी सिद्धान्त–रूप में मूर्तिपूजा को दूर करना और इस संसार में ईश्वरोपासना का प्रचार करना चाहता है। इसलिए उसका तो यह व्यक्ति एक देवदूत की भांति सिद्ध होगा। इसकी जितनी प्रशंसा की जाये थोड़ी है। यह व्यक्ति केवल धार्मिक सुधार का ही अभिलाषी नहीं है, अपितु समस्त जातीय बुराईयों के सुधार को दृष्टि में रखता है, जैसे देश में फैल रहा बाल्यावस्था में विवाह आदि। वह स्त्रियों की शिक्षा और उनकी स्वतन्त्रता का विशेष रूप से इच्छुक है और उसकी यह भी सम्मति है कि जब तक उनमें शिक्षा न फैलेगी तब तक उन्हें अपनी कैद से छुटकारा प्राप्त न होगा, और तब तक इस देश में किसी स्पष्ट उन्नति की आशा करना व्यर्थ है। सारांश यह है कि जाति से अविद्या और पक्षपात को दूर करना, विद्या का प्रचार करना और सुदृढ़ राष्ट्रीय एकता उत्पन्न करना और उसे साधारण सभ्यता के रूप में लाकर एक श्रेष्ठ नमूना बनाने का यत्न करना, इस व्यक्ति का सामान्य और विशेष उद्देश्य है।''

– बाल-विवाह का वैज्ञानिक आधार पर विरोध

स्वामी जी के समाज–सुधार के कार्य उनके द्वारा समाज के गहरे अध्ययन पर आधारित थे। यह अध्ययन समाज की वास्तविक परिस्थितियों अर्थात् सत्य पर आधारित था और सत्य के विषय में उनके विचार बहुत स्पष्ट थे। अपनी प्रमुख कृति 'सत्यार्थप्रकाश' में स्वामी जी ने सत्य के विषय में कहा है कि जो सत्य है उसको सत्य और जो मिथ्या है उसको मिथ्या ही प्रतिपादित करना मेरे इस ग्रन्थ का प्रयोजन है। उन्होंने यह भी कहा है कि वह सत्य नहीं कहाता जो सत्य के स्थान पर असत्य और असत्य के स्थान पर सत्य का प्रकाशन करता है। परन्तु जो पदार्थ जैसा है उसको वैसा ही कहना, लिखना और मानना सत्य कहाता है। बाल–विवाह जैसी कुप्रथा का विरोध उन्होंने उस समय की सामाजिक स्थितियों की यथार्थता को स्वीकारते हुए किया। उन्हें भली–भाँति ज्ञात था कि समाज का एक बड़ा वर्ग इस प्रथा के विरोध को उचित नहीं मानेगा, परन्तु मनुष्य के विकास में बाधक किसी भी प्रकार की प्रथा को वे स्वीकार नहीं कर सकते थे, क्योंकि वह सत्य के मार्ग में बाधक थी और मनुष्य के शरीर की संरचना और उसका विकास स्वामी दयानन्द ने आयुर्वेद के ग्रन्थों–चरक आदि से वैज्ञानिक आधार पर यह जान लिया था कि किस आयु में स्त्री, पुरुष में परिपक्वता आती है। इसलिए उनका दृढ़ विश्वास था कि बाल–विवाह जैसी कुप्रथायें स्वस्थ मनुष्य और स्वस्थ समाज के विकास में बाधक हैं। बाल–विवाह का विरोध करने के पीछे एक वैज्ञानिक आधार यह भी था कि मनुष्य में प्रजनन–क्षमता तथा प्रक्रिया यौवनावस्था (१२ वर्ष से १६ वर्ष) में चरम सीमा पर होती है और इस अवस्था में 'मनुष्य मानसिक व शारीरिक रूप से पूर्ण विकसित नहीं होता इसलिए उन्होंने स्त्री और पुरुष के विवाह की आयु उनके पूर्ण रूप से विकसित और मानसिक व शारीरिक रूप से परिपक्व हो जाने पर निश्चित की।

– अर्थशास्त्र पर आधारित गो-रक्षा

स्वामी दयानन्द के समाज–सुधार में गोधन की रक्षा तथा गोहत्या के विरुद्ध संघर्ष भी बहुत महत्वपूर्ण है। गोधन को स्वामी जी मनुष्य–जाति के लिए बहुत उपयोगी और जीवनदायी मानते थे। इसे सिद्ध करने के लिए उन्होंने गोधन के अर्थशास्त्र को समझाया। यह भी उनके समाज–सुधार का एक वैज्ञानिक आधार ही था जिसमें उन्होंने साधारण मनुष्य की आवश्यकता को ध्यान में रखकर एक सन्तुलित समाज के विकास का मार्ग बनाया। यह उस समय का एक आवश्यक सुधार–क्षेत्र था जिसमें समाज की मौलिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उसे अपने संसाधानों को सुरक्षित रखने और विकसित करने के लिए प्रेरित करना आवश्यक था।

– समग्र सुधार का आह्वान

स्वामी दयानन्द के चिन्तन और कार्यों में सतत गतिशीलता तथा प्रगतिशील विचारधारा स्पष्टरूप से दिखाई देती है। धार्मिक क्षेत्र व सामाजिक क्षेत्र के साथ–साथ उन्होंने राजनीतिक और प्रशासनिक क्षेत्र में भी अपने समाकालीन समाज–सुधारकों की तुलना में अधिक प्रगतिशील विचार दिये। धार्मिक क्षेत्र में परिवर्तन लाना तो उनका लक्ष्य था ही, स्वदेश की हीन अवस्था से भी वे पूरी तरह परिचित थे। उनकी यह धारणा बन चुकी थी कि अंग्रेजी शासन में प्रचलित न्याय–प्रणाली दोषपूर्ण है। उनका दृढ़ विश्वास था कि प्राचीन काल में प्रचलित पंचायत–प्रणाली, जिसमें ग्राम को इकाई मानकर वहां निवासियों के आपसी वाद–विवादों को मिल बैठकर सुलझा लिया जाता है, ग्राम–पंचायत–व्यवस्था भारत जैसे ग्रामीण प्रधान देश के लिए अनुकूल है। ब्रिटिश राज्य की समाप्ति के पश्चात् भारत में स्थानीय स्तर पर जो पंचायत राज्य स्थापित किया गया उसका आधार वही प्राचीन पंचायत राज्य प्रणाली है जिसे स्वामी जी भारतीय स्थानीय स्वशासन के लिए उचित मानते थे। यह स्वामी दयानन्द का भारतीय समाज के विषय में गहन चिन्तन का प्रतीक है और भारतीय समाज की परिस्थितियों का एक वैज्ञानिक मूल्यांकन। संक्षेप में, महर्षि दयानन्द की विचारधारा एक प्रगतिशील विचारधारा थी और वे सत्य के अन्वेषक थे। उनका दृष्टिकोण व्यापक था, वे जीवन और समाज की पूर्ण व्याख्या करना चाहते थे और अपनी विचार क्रान्ति में सबको साथ लेकर चलना उनका ध्येय था, यही समाज–सुधार में महत्वपूर्ण तथा वैज्ञानिक तथ्य हैं जो स्वामी दयानन्द के समाज–सुधार में प्रमुख थे। अन्त में डॉ० सत्यप्रकाश सरस्वती द्वारा उद्धृत ये शब्द स्वामी जी के व्यक्तित्व व वैज्ञानिक सोच को और अधिक स्पष्ट करते हैं– ''यदि कोई दयानन्द के दृष्टिकोण को समझले तो यदि वह ईसाई है तो और भी अधिक अच्छा और ईमानदार ईसाई बन सकता है; हिन्दू है तो अच्छा हिन्दू बन सकता है; जैन, मुसलमान, सिक्ख, पारसी है तो अच्छा जैन, मुसलमान, सिक्ख और पारसी बन सकता है; यदि वह राजनीतिक और राष्ट्रवादी है तो दयानन्द के दृष्टिकोण को समझ लेने पर वह अपने क्षेत्र में अच्छा कार्यकर्त्ता बन सकता है, यदि वह समाजवादी और साम्यवादी है तो वह अच्छा समाजवादी या साम्यवादी बन सकता है; ब्राह्मण अच्छा ब्राह्मण, शूद्र अच्छा शूद्र बन सकता है।''

एम.टी.एच.-७, विश्वविद्यालय परिसर,
कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र-१३६११९

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें
www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।
ई-मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

पर्व की पवित्रता बनी रहे

— जवाहरलाल कौल

दीपमाला का शुभ पर्व फिर आ रहा है। यह उत्साह और उल्लास का त्यौहार है। हम चाहे इसे राम से जोड़ें या लक्ष्मी से इस का उद्देश्य हमारे जीवन में खुशियाँ लाना ही है। इसलिए कोई भी ऐसा काम इस पर्व की भावना के अनुकूल नहीं हो सकता जिस से दूसरों के लिए संकट पैदा हो जाए। क्या हम ऐसी दीवाली की कल्पना कर सकते हैं जिस में मां–बाप अपने छोटे बच्चों को दूर रखने का प्रयास करें, बीमार और बूढ़े लोग इस के नाम से ही सहम जाएं? हम समय पर नहीं चेते तो ऐसा ही समय आने वाला है जब दीवाली शुभ संदेश देने वाली नहीं रहेगी– इस से लोग खुश नहीं होंगे, डर जाएंगे।

मैं आप के सामने जो तथ्य रखना चाहता हूँ उनके बारे में आप पहले से ही जानते होगे। मैं तो केवल याद दिलाने का प्रयास कर रहा हूँ।

१. हमारे देश में कम से कम बीस प्रतिशत बच्चे दमा और सांस के अन्य विकारों से पीड़ित हैं। इन में से बहुतों के विकार गम्भीर बीमारियों का रूप धारण कर चुके हैं। इन बीमारों में से पचास प्रतिशत से भी अधिक दिल्ली जैसे नगरों में ही रहते हैं।

२. सांस के रोगों का अनुपात बूढ़ों में इस से भी अधिक है। चिकित्सा और जीवन यापन की बेहतर सुविधाओं के बावजूद नगरों में रहने वाले लोगों में ये रोग ग्रामीण लोगों की तुलना में अधिक होते हैं।

३. दिल्ली में आग लगने और आग से जलने की घटनाओं में दीवाली के दिनों में खास वृद्धि होती है। सामान्य दुर्घटना में जलने की तुलना में पटाखों से जलना अधिक खतरनाक होता है क्योंकि इन में बारूद और दूसरे रासायनिक पदार्थ होते हैं।

इनका कारण तो साफ है।

हमारे नगरों–खासकर दिल्ली के वायु में भारी मात्रा में प्रदूषण है। कभी–कभी तो दिल्ली सब से अधिक प्रदूषित नगरों के शिखर पर बैठ जाती है। शायद ही कोई मौसम हो जब दिल्ली का वायुमण्डल स्वास्थ्य के मापदण्डों के अनुसा एकदम सही माना जाता हो। लेकिन दीवाली के दिनों में यह लगभग 'गैस चैम्बर' का रूप लेती है।

थोड़ा ध्यान दें कि इस हवा में होता क्या है।

धुएँ से पैदा होने वाले कार्बन–डाई–ओक्साइड के बारे में सब जानते हैं, लेकिन इसी कार्बन के मोनो–ओक्साइड के बारे में हम कितना जानते हैं? यह गैस खामोश हत्यारिन है। जो मारने से पहले न तो आवाज करती है और न महसूस होने देती है कि मौत कितनी निकट है। एक बार वार करने पर व्यक्ति में चाहकर भी कुछ करने की हिम्मत नहीं रहती। कुछ दिन पहले दिल्ली में ही एक पूरा परिवार मौत की नींद सो गया क्योंकि बरसात से बचने के लिए वे अपनी ही कार में देर तक बैठे रहे। इंजन से निकलने वाला कार्बन–मोनो–ओक्साइड उन्हें लील गया। यह अकेली घटना नहीं है– ऐसी दुर्घटनाएँ होती ही रहती हैं।

नाइट्रोजन और सल्फर के ओक्साइड, हाइड्रो कार्बन के विभिन्न यौगिक भी प्रदूषित वायु के अंग होते हैं। लेकिन एक खतरनाक गैस ओजोन भी धुएँ से भरी धुंध यानी स्मोग को घातक बनाती है। स्मोग धुएँ और धुंध के मिश्रण का नाम है जो भारी होने के कारण ऊपर से उतर कर धरती के निकट आकाश में लटका रहता है। इसमें पानी और धुएँ के अतिरिक्त विभिन्न गैसें और धूल के कण भी होते हैं। इस शब्द का पहली बार उपयोग १९०५ में यूरोप में किया गया जब कारखानों के धुएँ के कारण धुएँ के बादल नगरों के आकाश को ढ़क लेने लगे थे। लेकिन अब यह विषैलेस बादल हमारे नगरों में आम दृश्य बन गए हैं। दिल्ली स्मोग के प्रकोप वाले दुनिया के तीन प्रमुख नगरों में एक है। इस तरह के बादल इसलिए अधिक खतरनाक होते हैं कि ये भूमि के बहुत पास होते हैं।

चिंता की बात यह है कि ये सारे तत्व उस धुएँ में होते हैं जो दीवाली के दिनों पटाखों के कारण पैदा होता है। साधारण स्मोग की तुलना में यह इसलिए अधिक घातक है कि यह धरती के निकट ही नहीं होता हमें चारों ओर से घेरे रहता है। हम उसी को पीते हैं।

दीवाली हम मनाएँ और खूब उल्लास के साथ मनाएँ। पटाखे और फुल्झड़िया भी चलाएँ, दिए भी जलाएँ। आखिर यह हमारा प्रकाश पर्व है। लेकिन मर्यादा का भी ध्यान रखें। अगर हम गाड़ियों पर प्रदूषण के मानक लागू करते हैं, कारखानों को प्रदूषण रहित बनाने का प्रयास करते हैं तो अपने सामाजिक व्यवहार पर भी कुछ अंकुश लगाएँ। हमारे शास्त्रों की भी यही सलाह है कि– अति का सर्वत्र त्याग करना चाहिए।

आशा करता हूँ कि मेरे इस अनुरोध पर आप गम्भीरता से विचार करेंगे।

दिल्ली-३५

।।ओ३म्।।
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा
25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की महत्त्वाकांक्षी योजना

घर–घर तक पहुँचाई जायेगी परमात्मा की वेद वाणी

चारों वेदों का सम्पूर्ण हिन्दी भाष्य

भारी छूट पर उपलब्ध

(महर्षि दयानन्द, तुलसीराम स्वामी एवं पं. क्षेमकरण दास कृत)

(10 खण्ड, 9 जिल्दों में)

मात्र 3100/– में

एक वेद सैट मात्र 3100/– रुपये में उपलब्ध है।

10 अथवा उससे अधिक वेद सैट लेने पर
लागत मूल्य में 30 प्रतिशत की छूट दी जायेगी

प्रत्येक आर्य समाज, स्कूलों के पुस्तकालयों, वाचनालयों तथा प्रत्येक घर में परमात्मा की वाणी वेदों का होना आवश्यक है। अधिक से अधिक संख्या में अग्रिम आदेश भेजकर भारी छूट का लाभ उठायें। डाक व्यय 300/– रुपये अलग से देना होगा। प्रारम्भिक स्तर पर 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की योजना क्रियान्वित की जायेगी।

अपना आदेश **'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2 के पते पर अग्रिम भेजकर अपना वेदों का सैट बुक करा सकते हैं।

–: प्रकाशक :–
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002 ● दूरभाष :– 011–23274771

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।